International Journal of Multidisciplinary Allied Research Review and Practices

IJMARRP ISSN No: 2455-1570 (Volume 3, Issue 2, April 2016)

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विज्ञान, कला तथा वाणिज्य संकायों के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों का तुलनात्मक अध्ययन

Rekha Yadav

Research Scholar, Department of Education

Shri JJT University

सारांश

विद्यार्थियों की प्रथम पाठशाला परिवार ही होती है। परिवार या परिवार के सदस्य ही बालक को प्रेम, सहानुभूति तथा सहयोग का पाठ पढ़ाते है। बालक का स्वभाव 'कोरी स्लेट' की तरह होता है। जैसा शन्तिपूर्ण या अशान्तिपूर्ण वातावरण बालक को परिवार में मिलता है। बालक उसी के अुनसार ढल जाता है, इसलिए पारिवारिक सम्बन्धों को बनाए रखना तथा उन सम्बन्धों से बालक में अच्छे संस्कारों को डालना आज समाज में आवश्यकता महसूस हुई, इसलिए शोधकत्री ने इस विषय का चुनाव किया। शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के कला, विज्ञान तथा वाणिज्य संकायों के 600 विद्यार्थियों का चुनाव किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानव विचलन तथा 'टी' अनुपात सांख्यिकी प्रविधियों को प्रयुक्त किया गया।

प्रस्तावना

परिवार एक छोटी सामाजिक संस्था है। हस सब किसी ना किसी तरीके से पारिवारिक सम्बन्धों में बंधे हुए हैं, जैसे माता–पिता, भाई–बहन, दादा–दादी, चाचा–चाची आदि। इन सभी पारिवारिक सम्बन्धों के अपने–अपने कार्य होते हैं। ये सभी एक–दूसरे सम्बन्धों पर अपना प्रभाव भी डालते हैं। बच्चा भी परिवार के प्रत्येक सदस्य से हर पल प्रभावित होता रहता है। इसी प्रभाव से ही वह समाज के तौर–तरीके सीखता है। अपने अन्दर मूल्यों और अदर्शो का विकास करता है तथा अपने अन्दर उत्तम नागरिकता के गुणों का विकास करके अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है और अपने जीवन को कुशल और समृद्धशाली बनाता है अर्थात् बालक का पालन–पोषण तथा उसके जीवन का निर्माण जितने अच्छे परिवार में हो सकता है उतना कहीं और नहीं हो सकता। प्राचीन युग में संयुक्त परिवारों की प्रथा थी। संयुक्त परिवार में बच्चों में मूल्य शिक्षा तथा सामाजीकरण बहुत अच्छे ढंग से होता था और परिवार का अपनापन उसे शिष्टाचार तथा सदाचार की शिक्षा देता था (निम्मी पतं अप्रैल 2009) परन्तु आज के युग में संयुक्त परिवार बिखर रहे हैं तथा उन परिवारों की जगह अब एकाकी परिवारों ने ले ली है, जहां सिर्फ माता–पिता और उनके बच्चे ही

होते हैं। आज के युग में आधुनिकीकरण के प्रभाव तथा अपने कैरियर बनाने की होड़ में शहरों के अधिकतर माता–पिता व्यवसायों में लगे हुए हैं। अभिभावकों के नौकरी करने से उनके पास बच्चों को देने के लिए पैसा तो होता है पर समय नहीं। वे समय के अभाव की पूर्ति पैसे से करके अपने कर्त्तव्य को पूरा करने की कोशिश में रहते हैं, परन्तु यह होता है कि बच्चे को पैसा तो मिल जाता है, परन्तु सबसे अनमोल मूल्य और शिक्षा जो कि पैसे से भी नहीं खरीद सकते वह प्राप्त नहीं हो सकती है। अतः अभिभावकों की उपयुक्त भूमिका और जिम्मेदारियों से बच्चे के मानवीय गुणों का विकास हो सकता है तथा साथ ही साथ बच्चे में शैक्षणिक उपलब्धियों का विकास कराकर उसे सुयोग्य व सच्चा नागरिक बनाया जा सकता है। अतः स्पष्ट है कि बालकों के विकास में पारिवारिक सम्बन्धों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पारिवारिक वातावरण में अनेक ऐसे तत्व भी होते हैं जो पारिवारिक वातावरण को दूषित और अस्वस्थ बनाते हैं, जैसे – घरेलू लड़ाई–झगड़े, निर्धनता, माता–पिता का पक्षपातपूर्ण रैवया, परिवार में अधिक बच्चों का होना आदि। इन तत्वों से बच्चा नियमों, कर्त्तव्यों और मर्यादाओं का पालन करने के बजाय उनकी अवहेलना करने लगता है। इस अवहेलना का नतीजा उसके चरित्र, मूल्यों तथा शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ता है। वह नैतिक, सामाजिक और प्रजातांत्रिक मूल्यों को भूल जाता है तथा साथ ही शिक्षा में भी असफलता के दलदल में फँसता चला जाता है। (रेखा शर्मा, 2013) तथा इस कारण से किशोर अपराधों में भी दिन–प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है। इन अपराधों को परिवार तथा पारिवार के सम्बन्ध मिलकर ही समाप्त कर सकते हैं।

समस्या का कथन

''वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विज्ञान, कला तथा वाणिज्य संकायों के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों का तुलनात्मक अध्ययन।''

शोध के उद्देश्य

1. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के कला तथा विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के कला तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

IJMARRP ISSN No: 2455-1570 (Volume 3, Issue 2, April 2016)

शोध की परिकल्पनाएँ

1. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के कला तथा विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के कला तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

1. पारिवारिक सम्बन्ध – पारिवारिक सम्बन्धों में वे व्यक्ति आते हैं जो विवाह, रक्त या गोद लेने के सम्बन्धों से जुड़े होते हैं तथा सभी मिलकर एक परिवार का निर्माण करते हैं, जिनमें पति एवं पत्नी, माता–पिता, पुत्र–पुत्री, भाई–बहन और दादा–दादी सम्मिलित होते हैं।
2. विज्ञान संकाय – इस संकाय में जीव विभान, भौतिक विज्ञान, गणित, रसायन विज्ञान पढ़ने वाले विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं। इस वर्ग में विद्यार्थियों के लिए प्रयोगात्मक क्रियाएं जरूरी होती है।
3. कला संकाय – इस संकाय में संस्कृत, अंग्रेज़ी, हिन्दी, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, इतिहास, नागरिक शास्त्र पढ़ने वाले विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं।
4. वाणिज्य संकाय – इस संकाय में अर्थशास्त्र, सांख्यिकी तथा व्यापार की जानकारी प्राप्त करने वाले विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं।

अध्ययन विधि

वर्तमान शोध में वर्णानात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में डॉ0 जे.सी. सिन्हा तथा जी.पी. शैरी द्वारा निर्मित पारिवारिक सम्बन्ध सूची का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन का न्यादर्श तथा सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए रेवाड़ी जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के 11वीं व 12वीं कक्षा के विज्ञान, कला तथा वाणिज्य संकायों के 600 विद्यार्थियों को चुना गया तथा प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' अनुपात का प्रयोग किया गया है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय तथा कला संकाय स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक संबंधों का अन्तर

पारिवारिक सम्बन्ध	वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय के विद्यार्थी		वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थी		'टी' अनुपात
	माध्य	मानक विचलन	माध्य	मानक विचलन	
M.A.	17.7	3.87	19.6	4.15	4.75**
F.A.	16.32	3.79	17.10	3.36	2.17*
M.C.	14.17	3.37	13.40	2.95	2.44*
F.C.	11.98	3.08	11.36	2.84	2.09*
M.V.	9.51	4.18	8.93	4.39	1.35
F.V.	9.20	4.20	8.76	3.98	1.07

तालिका 1

M.A. = मातृ स्वीकृति M.C. = मातृ एकाग्रता M.V. = मातृ बचाव
F.A. = पितृ स्वीकृति F.C. = पितृ एकाग्रता F.V. = पितृ बचाव

* सार्थकता स्तर पर सार्थक 0.05 पर मान 1.96 है।

** सार्थकता स्तर पर सार्थक 0.01 पर मान 2.58 है।

उपरोक्त तालिका 1 वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय तथा कला संकाय के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों के M.A. (मातृ स्वीकृत) क्षेत्र के दोनों वर्गों का 'टी' मान 4.75 है जो 0.05 तथा 0.01 दोनों पर सार्थक अन्तर को दर्शाता है।F.A. (पिता स्वीकृत) क्षेत्र के, (M.C.) मातृ एकाग्रता तथा F.C. (पिता एकाग्रता) क्षेत्रों के दोनों वर्गों का 'टी' मान 2.17, 2.44 तथा 2.09 है जो कि सभी 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर तक 0. 01 पर असार्थक अन्तर को दर्शातें हैं।

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक संबंधों का अन्तर

पारिवारिक	वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विज्ञान	वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के वाणिज्य	'टी'

सम्बन्ध	संकाय के विद्यार्थी		संकाय के विद्यार्थी		अनुपात
	माध्य	मानक विचलन	माध्य	मानक विचलन	
M.A.	17.7	3.87	18.36	3.29	1.84
F.A.	16.32	3.79	17.59	3.35	3.55**
M.C.	14.17	3.37	15.15	4.62	2.43*
F.C.	11.98	3.08	12.68	3.88	1.99*
M.V.	9.51	4.18	11.87	6.19	4.46**
F.V.	9.20	4.20	10.14	5.01	2.03*

तालिका 2

उपरोक्त तालिका 2 इंगित करती है कि वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों के F.A. (पिता स्वीकृत) क्षेत्र के दोनों वर्गों का 'टी' मान 3.55 है जो 0.05 तथा 0.01 दोनों पर सार्थक अन्तर को दर्शाती है। M.C. (मातृ एकाग्रता) तथा F.C. (पिता एकाग्रता) क्षेत्रों का 'टी' मान 2.43 तथा 1.99 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक तथा 0.01 पर असार्थक अन्तर है। M.V. (मातृ बचाव) तथा F.V. (पितृ बचाव) क्षेत्रों का 'टी' मान 4.46 तथा 2.03 है। (M.V.) का 4.46 'टी' मान दोनों स्तरों 0.05 तथा 0.01 पर सार्थक अन्तर को दर्शाता है तथा F.V. का 'टी' मान 2.03 सिर्फ 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर को दर्शाता है।

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के वाणिज्य संकाय तथा कला संकाय स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक संबंधों का अन्तर

पारिवारिक सम्बन्ध	वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी		वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थी		'टी' अनुपात
	माध्य	मानक विचलन	माध्य	मानक विचलन	
M.A.	18.36	3.29	19.6	4.15	3.30**
F.A.	17.59	3.35	17.10	3.36	1.46
M.C.	15.15	4.62	13.40	2.95	4.52**
F.C.	12.68	3.88	11.36	2.84	3.88**
M.V.	11.87	6.19	8.93	4.39	5.48**
F.V.	10.14	5.01	8.76	3.98	3.05**

तालिका 3

उपरोक्त तालिका 3 दर्शाती है कि वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के वाणिज्य संकाय तथा कला संकाय स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों के M.A. (मातृ स्वीकृत) क्षेत्र के दोनों वर्गों का 'टी' मान 3.30 है जो 0. 05 तथा 0.01 दोनों पर सार्थक अन्तर को दर्शाती है। M.C. (मातृ एकाग्रता) तथा पिता एकाग्रता (F.C.) के

दोनों वर्गों का 'टी' मान 4.52 तथा 3.88 है जो कि दोनों 0.05 तथा 0.01 स्तरो पर सार्थक है। मातृ बचाव (M.V.) तथा (F.V.) पितृ बचाव क्षेत्राों के वर्गों का 'टी' मान 5.48 तथा 3.05 है जो कि दोनों 0.05 तथा 0. 01 स्तरों पर सार्थक अन्तर को दर्शाता है।

निष्कर्ष

1. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय तथा कला संकाय स्तर के विद्यार्थियों में पारिवारिक सम्बन्धों के M.A. (मातृ स्वीकृति), F.A. (पितृ स्वीकृति), M.C. (मातृ एकाग्रता), F.C. (पितृ एकाग्रता) क्षेत्रों पर सार्थक अन्तर पाया गया तथा M.V. (मातृ बचाव), F.V. (पितृ बचाव) पर असार्थक अन्तर पया गया। इस प्रकार परिकल्पना 1 अस्वीकृत हुई है।
2. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के वाणिज्य संकाय तथा कला संकाय स्तर के विद्यार्थियों में पारिवारिक सम्बन्धों के F.A. (पितृ स्वीकृति) क्षेत्र को छोड़कर बाकि सभी क्षेत्रों पर सार्थक अन्तर पाया गया। परिकल्पना 2 अस्वीकृत हुई है।
3. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय स्तर के विद्यार्थियों में पारिवारिक सम्बन्धों के M.A. (मातृ स्वीकृति) क्षेत्र को छोड़कर बाकि सभी क्षेत्रों पर सार्थक अन्तर पाया गया। परिकल्पना 3 अस्वीकृत हुई है।

सन्दर्भ सूची

कालरा राजकुमार एवं मनानी प्रीति (2013), गृह पर्यावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, परिप्रक्षेय, अंक 3, पेज 97–103.

शर्मा रेखा तथा राय राकेश (2013), किशोर अपराधियों के पारिवारिक तथा भौतिक वातावरण का सामाजिक आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन, शिक्षा और मनोविज्ञान अनुसंधान, वोल्यूम–3ए अंक 1, पेज 126–128.

सरीन एवं सरीन अंजनी (2007), शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2 ISBN 81–7457–250–3, पेज 56–59.

शर्मा हितेश (2014), किशोरों की अपने परिवार से अपेक्षा एवं उनके क्रोध का अध्ययन प्रौढ़ शिक्षा, वर्ष 58, अंक–4.